परंपरागत एवं स्मार्ट कक्षा द्वारा पढ़ाये जाने वाले कक्षा 9 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का एक प्रयोगात्मक अध्ययन

भावना गुप्ता

सहायक आचार्य, रघुकुल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, जयपुर

Corresponding Email: bhavnaguptaiti@gmail.com

सारांश :- प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के परंपरागत तथा स्मार्ट कक्षा द्वारा पढ़ाये जाने वाले कक्षा 9 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना है। शोध की प्रकृति प्रयोगात्मक होने के कारण प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में शोध समूहों के संकलन हेतु साधारण अनियमित विधि के आधार पर न्यादर्श हेतु जयपुर जिले के केन्द्रीय विद्यालय का चयन किया गया है तथा कक्षा 9 के विद्यार्थियों का चयन सोद्देश्यीय न्यादर्श विधि के आधार पर किया गया है जिसमें कुल न्यादर्श के रूप में 60 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें 30 विद्यार्थी परंपरागत कक्षा के और 30 विद्यार्थी स्मार्ट कक्षा के लिये गये। प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वनिर्मित सामाजिक अध्ययन उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया है। शोध के परिणामों से ज्ञात हुआ है कि शिक्षा कर गुणवत्ता को बढ़ाने एवं विद्यार्थियों का ध्यान केन्द्रित करने के लिए विद्यालयों में स्मार्ट बोर्ड का उपयोग किया जाना चाहिए।

मुख्य शब्दावली :- परंपरागत शिक्षण, स्मार्ट शिक्षण, शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना :- वर्तमान समय में सामाजिक एवं तकनीकी परिवर्तन लाने में नवाचारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। साथ ही नवाचारों के परिणाम स्वरूप सांस्कृतिक परिदृश्य बदलता दिखाई दे रहा है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए कक्षा-कक्ष में स्मार्ट बोर्ड का प्रयोग किया जाना चाहिए क्योंकि स्मार्ट क्लास शिक्षण द्वारा विषय वस्तु का प्रत्यक्ष एवं स्थायी ज्ञान प्रदान किया जाता है तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को भी बढ़ाया जा सकता है।

समस्या का औचित्य :- वर्तमान समय में शिक्षा के साथ तकनीकी का विकास दिन

प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। बालकों को तकनीकी ज्ञान प्रदान करने हेतु विद्यालय स्तर पर कम्प्यूटर शिक्षा को अनिवार्य का दिया गया है।

आज की शिक्षा व्यवस्था शैक्षिक पद्धति पर नज़र डालें तो हम देखेंगे कि वर्तमान समय में भी बालकों को केवल पुस्तकों द्वारा सैद्धांतिक ज्ञान व्याख्या पद्धति के माध्यम से अधिक दिया जा रहा है, जिससे उनका शिक्षण के प्रति रुझान कम हो गया है जिसके परिणामस्वरूप हमारी शिक्षा अपने लक्ष्य से दूर होती जा रही है।

इस संबंध में विद्यालयों में शिक्षण की आधुनिक एवं नवीन तकनीकी में स्मार्ट क्लास की अवधारणा को ग्रहण किया जा रहा है, जो परंपरागत शिक्षण से पूर्णतः भिन्न है, क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य बालकों को मात्र सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना नहीं है, अपितु उन्हें व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना है, जिससे वे जीवन में सफलता प्राप्त कर सकें। यह एक व्यापक स्तर होता है, जिसमें विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति का सर्वश्रेष्ठ योगदान माना गया है।

इस नई विधा का शिक्षण के प्रति प्रयोग से विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह ज्ञात कर सकेंगे। कक्षा-9 के विद्यार्थियों को परंपरागत और स्मार्ट क्लास द्वारा शिक्षण कराया जाए तो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है

शोध के उद्देश्य :- परंपरागत और स्मार्ट कक्षा द्वारा पढ़ाये जाने वाले छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना

शोध परिकल्पना :- प्रस्तुत अध्ययन में दिशाविहीन परिकल्पना (शून्य परिकल्पना) है।

1. परंपरागत एवं स्मार्ट कक्षा द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. परंपरागत कक्षा द्वारा पढ़ाये जाने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि

में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

3. स्मार्ट कक्षा द्वारा पढ़ाये जाने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध की सीमाएं :-

1. प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के शहरी क्षेत्र के केन्द्रीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य को सामाजिक अध्ययन विषय तक ही परिसीमित किया गया है।

शोध विधि :- प्रस्तुत शोध में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :- प्रस्तुत शोध पत्र में विद्यालय संबंधी न्यादर्श चयन हेतु साधारण अनियमित न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण :- शोधकर्त्री द्वारा निर्मित सामाजिक अध्ययन विषय के स्वनिर्मित उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं सांख्यिकी :- 'टी' परीक्षण द्वारा तथ्यों का विश्लेषण किया गया।

विश्लेषण एवं परिणाम :-

परिकल्पना नम्बर-1

परंपरागत एवं स्मार्ट कक्षा द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परंपरागत एवं स्मार्ट कक्षा द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि :-

क्रम सं.	कक्षा	न्यादर्श की संख्या(N)	मध्यमान	मध्यमानों का अन्तर	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता स्तर मान	परिकल्पना की जाँच
1	परंपरागत कक्षा	22	4.64	3	1.67	2.22	0.05	स्वीकृत
2	स्मार्ट कक्षा	28	7.64		0.15		2.01	

Degree of freedom – 48 और 0.05

के सार्थक स्तर पर टी का मान –2.22

विश्लेषण :- 'टी' का प्राप्त मान 2.22

स्वतंत्रता अंश 48 0.05 के सार्थकता मानों से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना निरस्त होती है।

निष्कर्ष :- स्मार्ट कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि परंपरागत कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक है, क्योंकि स्मार्ट कक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान स्थायी रहता है और इसमें विषय वस्तु का प्रत्यक्ष व वास्तविक ज्ञान प्रदान किया जाता है।

परिकल्पना नंबर – 2

परंपरागत कक्षा द्वारा पढ़ाये जाने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्रम सं.	कक्षा	न्यादर्श की संख्या(N)	मध्यमान	मध्यमानों का अन्तर	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता स्तर मान	परिकल्पना की जाँच
1	छात्र	13	4.27	0.89	2.02	0.48	0.05	स्वीकृत
2	छात्राएँ	9	5.16		1.31		2.09	

Degree of freedom = 20 और 0.05 के सार्थक स्तर पर टी मान – 0.48

विश्लेषण :- 'टी' का प्राप्त मान 0.48 स्वतंत्रता अंश 20 पर 0.05 के सार्थकता मानों से कम है। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष :- परंपरागत कक्षा द्वारा पढ़ाये छात्र – छात्राओं की निष्पत्ति समान है। उनके अनुसार परंपरागत कक्षा द्वारा भी अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न की जा सकती है।

परिकल्पना नंबर – 3

स्मार्ट कक्षा द्वारा पढ़ाये जाने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्रम सं.	कक्षा	न्यादर्श की संख्या(N)	मध्यमान	मध्यमानों का अन्तर	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता स्तर मान	परिकल्पना की जाँच
1	छात्र	19	7.55	0.28	0.36	0.32	0.05	स्वीकृत
2	छात्राएँ	9	7.83		0.37		2.06	

Degree of freedom = 26 और 0.05 के सार्थक स्तर पर टी मान 0.32

विश्लेषण :- 'टी' का प्राप्त मान 0.32 स्वतंत्रता अंश 26 पर 0.05 के सार्थकता मानों से कम है। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष :- स्मार्ट कक्षा द्वारा पढ़ाये जाने वाले छात्र एवं छात्राओं की निष्पत्ति समान है। उनके अनुसार स्मार्ट कक्षा द्वारा भी अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न की जा सकती है।

सुझाव :- स्मार्ट कक्षा द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक अर्थात् उच्च पायी गयी, क्योंकि स्मार्ट क्लास शिक्षण द्वारा विषय का प्रत्यक्ष एवं स्थायी ज्ञान प्रदान किया जाता है, इसके द्वारा बालकों का विषय वस्तु पर ध्यान केन्द्रित किया जा सकता है।

परंपरागत शिक्षण के द्वारा भी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को उच्च किया जा सकता है इसके लिए शिक्षकों को कक्षा में विद्यार्थियों का ध्यान केन्द्रित करने के लिए नवीन शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करना चाहिए तथा समय-समय पर विद्यार्थियों के ज्ञान के स्तर को जाँचने के लिए परीक्षाओं का आयोजन करना चाहिए। साथ ही भ्रमण का आयोजन भी करना चाहिए। इस प्रकार की प्रक्रियाओं के द्वारा परंपरागत शिक्षण से भी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को उच्च किया जा सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ :-

1. विद्यार्थी अपने ज्ञान को व्यापक व स्थायी बनाने में एवं विषय वस्तु का प्रत्यक्ष व वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

2. स्मार्ट क्लास द्वारा अध्यापन से शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में गुणात्मक परिवर्तन कर सकते हैं।

3. विद्यालय में स्मार्ट क्लास शिक्षण को अपनाया जाना चाहिए, जिससे शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावी तथा अपनी संप्रेषण कला में सुधार ला सकते हैं।

संदर्भ :-

1. जायसवाल, के (1993) 'विज्ञान शिक्षा में टी.वी. कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन'
2. महाजन (1994) 'शिक्षण में कम्प्यूटर अनुदेशन कर प्रभावशीलता का अध्ययन'
3. सिंह, उम्मेद (1995) 'शिक्षण वातावरणीय जागरूकता से संबंधित चलचित्र युक्त पाठ्य सामग्री के विकास का अध्ययन'
4. ऑमेन, अब्राहम (2012) 'शिक्षण के रूप में अंग्रेजी भाषा का स्मार्ट क्लास के साथ पॉवर पॉइन्ट प्रेजेंटेशन'
5. बारैरा, मगडॉलेमा, एल (2014) 'स्मार्ट विद्यालय: शिक्षण शास्त्र और व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि का प्रतिबिंब'